॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

स नः सूर्य प्र तिर दीर्घमायुः

(अथर्व० 13.2.37)

हे सूर्य! तुम हमें दीर्घायु प्रदान करो।

वर्ष ३३, अंक २० एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार ५ अप्रैल, २०१० से ११ अप्रैल, २०१० तक

विक्रमी सम्वत् २०६७ दयानन्दाब्द : १८७

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१११ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

पृष्ठ १ से ८ तक

नियम 280 की चर्चा के उत्तर में मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित का बयान

दिल्ली में बनेगा दिव्य महर्षि दयानन्द स्मारक

दिल्ली, 31 मार्च 2010 को दिल्ली की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने महर्षि दयानन्द के महान उपकारों और उनके सामाजिक व राष्ट्रीय योगदान की चर्चा के दौरान दिल्ली में किसी उचित स्थान पर महर्षि के महान कार्यों की जानकारी देने वाला एक भव्य स्मारक, कीर्ति स्तम्भ बनाने की विधानसभा में स्वीकृति प्रदान की। यह सूचना पाकर समस्त आर्य जनता में खुशी की लहर दौड़ गई। श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा यह घोषणा करने पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल आर्य (एम. डी. एच.) तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह जी आर्य ने आर्य जनता को दिये गए इस उपहार के प्रति माननीया मुख्यमंत्री जी का हार्दिक आभार प्रकट किया है।

विधानसभा में 31 मार्च को डॉ. रमाकान्त गोस्वामी जी ने नियम 280 के अन्तर्गत चर्चा करते हुए महर्षि के महान उपकारों को पूरी संजीदगी से रखा। उन्होंने महर्षि के समाज व राष्ट्र के प्रति किए गए क्रान्तिकारी कार्यों तथा नारी जाति के उद्धार के लिए किये गए उनके उपकारों की विस्तृत चर्चा की। डॉ. गोस्वामी जी की इसी चर्चा के उत्तर में माननीया मुख्यमंत्री जी ने कहा कि दिल्ली में किसी उचित स्थान के मिलने पर शीघ्र ही महर्षि की पावन स्मृति में भव्य स्मारक का निर्माण प्रारम्भ कर दिया जाएगा। विधानसभा में महर्षि दयानन्द के स्मारक सम्बन्धी चर्चा करने के लिए समस्त आर्य जगत् डॉ. रमाकान्त गोस्वामी जी के प्रति आभार प्रकट करता है।

विधान सभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द जी शास्त्री ने इस चर्चा के लिए समय दिया, इसके लिए आर्यजगत् उनके प्रति भी आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता है।

ज्ञातव्य है कि गत दिनों महर्षि दयानन्द के निर्वाण के 125वें वर्ष पर विज्ञान भवन में आयोजित विशाल समारोह के अन्तर्गत महामहिम राष्ट्रपति जी के मुख्य आतिथ्य एवं मुख्यमंत्री शीला दीक्षित की अध्यक्षता में महर्षि के इस भव्य स्मारक की माँग आर्यसमाज द्वारा रखी गई थी।

दिल्ली विधान सभा में डॉ. रमाकान्त गोस्वामी का वक्तव्य

श्रीमान,

अध्यक्ष महोदय, दिल्ली विधान सभा, दिल्ली

विषय :– नियम 280 के अन्तर्गत अनुमति

आदरणीय महोदय,

भारतीय वैदिक संस्कृति के पोषक एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान प्रणेता तथा प्रजातन्त्र के समर्थक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के योगदान को कृतज्ञ राष्ट्र कभी भुला नहीं सकता। राजनीतिक जीवन में निराशाओं, सामाजिक जीवन में व्याप्त बुराइयों, धार्मिक अन्ध विश्वासों, पाखण्डों के विरुद्ध आन्दोलन चलाने वाले स्वामी जी स्वदेशी एवं राष्ट्र की संस्कृति के प्रबल समर्थक थे। स्वामी जी एक धर्म पुरुष थे। वह संन्यासी थे, लेकिन उनकी सामाजिक जीवन से विरक्ति नहीं थी। स्वामी जी ने स्त्री जाति–नारी की गरिमा और उसके गौरव को बढ़ाया।

अध्यक्ष जी, स्वामी जी ने दलितोद्धार के लिए आन्दोलन चलाया और जाति–पांत को खत्म करने के लिए विशेष आन्दोलन चलाया।

अध्यक्ष जी, स्वामी जी ने वास्तव में आर्य धर्म, आर्य संस्कृति और आर्य भाषा के लिए जो कार्य किया इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वास्तव में स्वामी जी मानव समानता और जागृति आन्दोलन के निर्भीक दूत और महान समाज सुधारक थे।

अध्यक्ष जी, विगत वर्ष स्वामी जी के 125वें निर्वाण दिवस पर देश की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल जी की उपस्थिति में विज्ञान भवन में मनाया गया। इस अवसर पर हमारी मुख्यमंत्री आदरणीया श्रीमती शीला दीक्षित जी ने अध्यक्षता की थी।

अध्यक्ष जी, ऐसे महान व्यक्तित्व और भारत के ऋषि को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए राजधानी दिल्ली में ऋषि जी के नाम से एक राष्ट्रीय स्मारक निर्मित किया जाए। अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद एवं आभार।

दिनांक : 31 मार्च, 2010

– रमाकान्त गोस्वामी, विधायक एवं उपाध्यक्ष, दिल्ली जल बोर्ड

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी का मनाया

87 वां जन्मदिवस

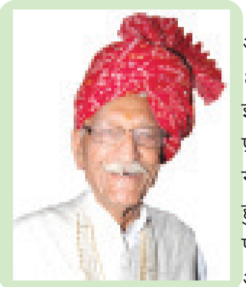

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता और केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि के प्रधान महाशय धर्मपाल जी का 87 वां जन्मदिवस हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर उनके कीर्तिनगर औद्योगिक प्रतिष्ठान में प्रातःकाल और सायंकाल यज्ञ किया गया। प्रातःकाल यज्ञ के बाद प्रवचन और भजन हुए। महाशय जी को बड़ी भारी संख्या में उनके परिजनों, आर्यसमाज के विभिन्न संगठनों – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, वेद प्रचार मंडलों, गुरुकुलों, आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल तथा आर्यसमाजों के पदाधिकारियों, सदस्यों, आर्य नेताओं, व्यापारिक मित्रों, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संगठनों एवं सस्थाओं आदि से जुड़े अनेक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित लोगों सर्वश्री धर्मपाल आर्य, राजीव आर्य, सुरेन्द्र रैली, विनय आर्य तथा अनेक आर्यजनों ने उन्हें जन्मदिवस की बधाई देते हुए उनके दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना की। वहां दिन भर चले ऋषि लंगर में अनेक लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रातः काल 9 बजे से शुरू हुआ यह आयोजन रात्रि 9 बजे तक चला और उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा रहा।

संगठन के मजबूत होने से ही बचेंगे आर्यसमाज

कोर्ट के आदेश से हुआ झिलमिल कालोनी आर्यसमाज का चुनाव

मिली अराजक तत्त्वों को मात

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित बहुत पुरानी आर्यसमाज है। लगभग पाँच वर्ष पूर्व कुछ स्वार्थी एवं अराजक तत्त्वों ने आर्यसमाज की सम्पत्ति को बेचने का षड्यंत्र रचा।

– शेष पृष्ठ 5 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन सम्पन्न

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान बने

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के बहुत लम्बे समय से चले आ रहे विवाद को 30 मार्च 2010 को कोर्ट द्वारा नियुक्त प्रशासक न्यायमूर्ति एस.सी. वर्मा एवं उप रजिस्ट्रार श्री उमाशंकर सिंह जी ने निर्वाचन कराकर समाप्त कर दिया। इस निर्वावन में श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी को बहुमत के साथ प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। आशा है सभा आर्यसमाज के कार्यों को पूरी तरह से आगे बढ़ाएगी। ***श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी एवं नव निर्वाचित कार्यकारिणी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।***

कुछ अमृत कण

सत्यार्थ–प्रकाश के प्रथम संस्करण अत्यन्त उपयोगी स्थलों का संग्रह

तृतीय–समुल्लास

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा....... इत्यादि मन्त्रों में तीन बार पाठ की आवश्यकता।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचारी के लिए कर्तव्य कार्यों का निरूपण करते हुए देवयज्ञ का विधान दिया है। सभी याजक जन जानते हैं कि अग्निहोत्र में संस्कार विधि के अनुसार व्याहृति आदि आहुतियों का पाठ इस प्रकार है – ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।। ...... आदि इन मन्त्रों में और इन जैसे अन्य मन्त्रों में भी तीन भाग वाले पाठ की क्या आवश्यकता व महत्त्व है – इस विषय पर प्रकाश डालते हुए महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण के तृतीय सम्मुलास में प्रतिपादन किया कि –"ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।। ओं भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम।। ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदन्न मम।। ओं भूर्भुवः स्वरग्नि वाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्य इदन्न मम।। ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।"

''और जो इसमें तीन वार पाठ 1. अग्नये स्वाहा, 2. इदमग्नये, 3. इदन्न मम है, सो प्रथम जो 'अग्नये स्वाहा' इस का अर्थ यह है कि **जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देश्य से ही करना**। 'इदमग्नये' दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि **सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है** क्योंकि कार्य जो होता है सो कारण ही वाला होता है। 'इदन्न मम' यह जो तीसरा पाठ है, सो इस अभिप्राय से है कि **'यह जो जगत् है सो मेरा नहीं है** किन्तु परमेश्वर की ही रचना है। किसलिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने पदार्थ बनाये हैं। हम लोग तो भृत्यवत् हैं। **परमेश्वर ही इस जगत् का स्वामी है। क्योंकि जिसका पदार्थ होता है, उसका वही स्वामी होता है।"**

– क्रमशः

Cont. form last issue **The Sixteen Rituals of Aaryas**

Nishkraman Sanskaar

(The ritual of taking an infant out of the house for the first time)

The sixth ritual is Nishkraman sanskaar . Nishkraman means to move out. Until this point, the child was enclosed within the four walls of the house. But he is not supposed to continue staying inside the closed home environs, but has to move out. For physical and mental development, nothing is as important as the cool air and sunshine. Keeping this in mind, a righteous ritual has been formulated so as to allow the child to enjoy the cool fresh air and the life-giving rays of the sun. Since the kid is not yet fit to roam around on his own, it has been assigned in the duties of the parents to take him/ her out of the house and subject him/ her to the pure air and sunlight.

The time for Nishkraman sanskaar : According to Gobhil Grihyasutra, the right time for performing Nishkraman Sanskaar is on the third day of the third month after birth i.e. after two months and three days. Paaraskar Grihyasutra postulated the performance of this ritual during the fourth month after birth. However, there is no basic difference between the two. The point is that if the child is weak then he should be subjected to the outer environs after three months and if he is healthy, he can be taken out to face this time, there is the risk that the child would catch the cold or the heat.

Following the Naamakaran Sanskaar, the light thrown on the child's dwelling, clothes, toys, protection and upbringing, is worth paying attention to, keeping in mind the child's development. As written in Shaareer Sthaan part:

Kumaaragaar : The child's dwelling : Engineers adept in house construction should get the house constructed in an eminent, beautiful place having passage for air (not too airy, though) without any scope for the entry of dogs, rats, mosquitoes. harmful insects etc. Inside the house, there should be specific places assigned for water, grinding, toilets, bathroom, and kitchen. There should be facilities corresponding to each season—sleeping, sitting, bedding should be present according to the weather. All means of security, all necessities for Havan (brahmanical fire sacrifice) and celebrations should be present in the child's dwelling. Aged Aayurvedic doctors harboring pure thoughts and people who love children should be present in the house. This is the child's dwelling and should contain arrangements for the upbringing of the child.

Child's clothes : The bed, seat and spreadsheets should be soft, light, clean and fragrant. Clothing contaminated with sweat, waste, urine, lice etc should be removed and replaced with new ones. If new ones cannot be procured, the old one should be thoroughly washed, steamed with Guggul (a fragrant resin), mustard, asafetida, sweet-flag etc. and then dried before putting to use.

Child's toys : Children's toys should be of a kind that produce a unique sound, are pleasing in appearance, light, non-pointed, non-swallowable and not dangerous in any manner.

Child's mental development : It is not advisable to intimidate or frighten the child. If for any reason, the child starts weeping, refuses to eat or does not pay attention, one should not refuses to demons, fiends, devil etc.

- Gyaaneshwaraarya, *Darshanacacharya*
To be continued....

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य राजनैतिकं चिन्तनम्

गतांक से आगे :–

ते नो ऽअर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्रसा मेधसाता सनिष्यवो महो ये धन७ समिथेषु जभ्रिरे।। (य. 9.17)

य इमे राजपुरुषा अस्माकं सकाशात्करं गृह्णन्ति, तेऽस्मान् सततं रक्षन्तु। नो चेन्मा गृह्णन्तु। वयमषितेभ्यः करं नैव दद्याम। अतः प्रजारक्षणायैव करदानं दुष्कर्मेभिः सह योद्धुं च नान्यदर्थमिति निश्चयः। (द. भा.)।

एवं न्याय–पूर्वकं करं गृह्णन् राजा स्व–कोशं वर्धयित्। तेन च वर्धितेन कोशेन राज्ये सुरक्षा–प्रबंधं कुर्वीत। कार्याणामनेकत्वादेकस्मिन्नेव समये विभिन्नदिक्षु करणीयत्वात् राज्ञामात्या नियोक्तव्याः। ते चामात्या दीर्घ–जीविनः, न्याय–शीलवृत्ताः, धार्मिकाः, सर्वतो गुण–ग्राहकाः, श्रेष्ठोपमा (द्र.ऋ. 4.42.1), ब्रह्मचर्य–विद्या–सत्याचरण–जितेन्द्रयत्वादिभिरतुलं बलं वर्धयित्वा शत्रून्निवार्य प्रजानां पालकाः (द्र. ऋ. 4.41.4) स्युः। ये शत्रूणां छलैर्वञ्चिता न स्युः, सङ्ग्रामेषूत्साहिताः शौर्योपेला युध्येयुः , सर्वतो गुणान् गृहीत्वा दोषांस्त्यजेयुस्त एवामात्याः स्युरिति (ऋ. 7.1.10)। एवं राज्यः स्त्रियोऽमात्यत्वेन नियोजयेयुः। एवं स्वामि–दयानन्दमते केचनामात्य–गुणा वर्णिताः। ते च राजा च परस्परं सम्मताः सन्तो द्रोह–निन्दाऽधर्माचरणात् पृथग्भूत्वा शिष्टाचाराः सन्तः दशसु दिक्षु कीर्तिं प्रसारयेयुरिति (द्र. ऋ. 4.4.15)। तथा च सत्यार्थप्रकाशे मन्त्रि–गुप्तचर –पुरोहितादीनां नियुक्तिं, तेषां योग्यतां, कर्त्तव्यानां च विषये मनु–मतमेव प्रदर्श्य व्याख्यातवान्। तेषां सहायेन स–

उत्थाय पश्चिमे यामे कृतशौचः समाहितः।
हुताग्निब्राह्मणांश्चार्च्य प्रविशेत्स शुभां सभाम्।। (मनुस्मृति)

प्रातः काले उत्थाय....................सभां प्रविशेदिति।

तत्र स्थिताः प्रजा सर्वाः प्रतिनन्द्य विसर्जयेत्।
विसृज्य च प्रजाः सर्वाः मन्त्रयेत्सह मन्त्रिभिः।। (मनुस्मृति)

तत्सभायां स्थित्वा तत्र प्रतीक्षमाणाः प्रजाः प्रतिनन्द्य, तान् त्यक्त्वा मुख्यमन्त्रिणा सह राज्य–व्यवस्थाविषयं मन्त्रयेत्।

गिरिपृष्ठं समारुह्य प्रासादं वा रहोगतः।
अरण्ये निःशलाके वा मन्त्रयेदविभावितः।। (मनुस्मृति)

– आचार्यो रवीन्द्रः, आर्ष विश्वविद्यालयम् वडलूरु, कामारेड्डी (आं.प्र.)
(राष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी, 5–6 सितम्बर, 09 को पाठित निबन्ध) *क्रमशः*

क्रोध महा चाण्डाल

– महात्मा आनन्द स्वामी

गंगा के किनारे एक साधु अपनी कुटिया बनाकर रहते थे। एक दिन उन्होंने अपने कपड़े धोए। धूप अच्छी थी, वहीं गंगा के किनारे रेत पर सूखने के लिए डाल दिए। तब स्वयं नहाए। नहा–धोकर अपनी कुटिया में जाकर बैठ गए। तभी एक चाण्डाल आया वहा। उसे भी गर्मी लग रही थी। उसने सोचा– 'गंगाजी के शीतल जल में स्नान कर लूँ।' स्नान करने के पश्चात् बाहर निकला तो सोचा 'कपड़ें मैले हो गए हैं, इन्हें भी धो लूँ।' बस, कपड़े धोने लगा।

कपड़े धोने की आवाज कुटिया में पहुँची तो साधु ने सोचा कि कपड़े कौन धोता है? बाहर आकर देखा तो एक चाण्डाल कपड़े धो रहा है। यह भी देखा कि उसके कपड़ों से उड़नेवाले छींटे साधु के सूखते हुए कपड़ों पर गिर रहे हैं। बस, फिर क्या था! चढ़ गया क्रोध। दौड़ते हुए वह साधु चाण्डाल के पास पहुँचा और गालियाँ देते हुए बोला–"तू अन्धा है? चाण्डाल होकर यहाँ कपड़े धोता है? तेरे अपवित्र छींटों ने मेरे कपड़ों को अपवित्र कर दिया है।" आगे बढ़कर तीन–चार चपत उन्होंने चाण्डाल के मुँह पर लगा दिए। चाण्डाल हाथ जोड़कर खड़ा रहा। साधु महाराज चिल्लाकर बोले– "फिर मत आना इस स्थान पर।"

साधु महाराज थे बूढ़े और दुर्बल। चाण्डाल था हृष्ट–पुष्ट। साधु बाबा थक गए। हाँफने लगे। गर्मी जो लगी तो गंगा में पहुँचकर नहाने लगे।

चाण्डाल को भी मार खाकर पसीना आ गया था। वह भी गंगा में कूद पड़ा। साधु बाबा ने चिल्लाकर कहा–"अभी तो पसीने से तर हो रहा है। एकदम गंगा में कूद पड़ा। सर्द–गर्म हो गया तो मरेगा। और फिर तू तो नहा चुका था, अब क्यों नहाता है?"

चाण्डाल बोला–"महाराज! आप भी तो नहा चुके थे, आप क्यों नहाते हैं?"

साधु ने कहा– "मुझे चाण्डाल ने छू लिया था, इसलिए नहाता हूँ।"

चाण्डाल बोला– "और मुझे महा चाण्डाल आपके क्रोध ने छू लिया था, इसलिए नहाता हूँ।"

वस्तुतः यह क्रोध महा–चाण्डाल है। सब कुछ बिगाड़ देता है। जहाँ उत्पन्न हो जाय, वहाँ सर्वनाश कर देता है। कुछ भी शेष नहीं रहने देता। प्रसन्नचित्त, निर्मलचित्त वह है, जिसमें क्रोध नहीं है। मन को प्रसन्न और निर्मल बनाने का पहला साधन यह है कि क्रोध को अपने निकट मत आने दो। शान्त और गम्भीर बनकर रहो।

कुम्भ पर्व का अनर्गल ऐतिहासिक विश्लेषण का विश्लेषण

परब्रह्म की यथार्थ ज्ञान साधन पृथिवी, सृष्टि निर्माण का स्रोत, विद्युत, बादल का ओज अन्तरिक्ष एवं सम्पूर्ण ज्योति, शक्ति, आकाश, प्रकाश, आभास का भण्डार द्यौ ब्रह्म के वे बल, वे शक्ति, वे ऐश्वर्य हैं, जिनसे हम प्रतिक्षण सबल, सशक्त, समुन्त होते रहते हैं। ब्रह्म के त्रिलोकीय ये सामर्थ्य अपनी पूर्णता से हमें पूरित करते रहते हैं। ये हमारे जीवन के पर्व हैं, पूरक हैं। पर्व होता ही वही है 'पर्वति पूरयति जनान् आनन्दनेन इति' पर्व जो हमें आनन्द, उल्लास, प्रसन्नता से भर दे, पूरित कर दे।

नदियों का बहना, वृक्ष, अन्नादि का फलना, फूलना, सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों का अमा, पूर्ण गतियां, संक्रान्तियाँ, ऋतुओं का बदलना, मेघ का गरजना, बरसना आदि समस्त क्रियाएँ, जहाँ तत् तत् पदार्थों के अस्तित्व का कर्म हैं वहीं वे हमारे आत्मिक, दैविक, भौतिक जीवन के आनन्द, सुख– समृद्धि के उद्‌गम सूत्र हैं, अन्तः सञ्चारी शक्ति हैं। इन पदार्थों की इस महत्ता को यह 'पर्व' शब्द समेटे हुए हैं। जिसकी अभिव्यक्ति बृहद् यज्ञ, याग, सभा, गोष्ठियों के रूप में ऋषि, मुनि करते–कराते आये हैं और महाभारत युद्ध के पश्चात् यह अभिव्यक्ति गंगा, दशहरा, होली, दीपावली, मकर संक्रान्ति, दीपार्चन, नाच, खेल–कूद, तमाशे, मेले, ठेले आदि के रूप में हुई। मेलों में मार्गशीर्ष मेला एवं माघ मेला अति प्रसिद्ध हैं जो सोरों सूकर क्षेत्र प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन में अनुष्ठित होते हैं, होते रहे हैं।

कालान्तर में प्रयाग, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में प्रतिवर्ष होने वाले ये माघ मेले कुम्भ मेला में परिवर्तित हुए। इनके साथ समुद्र मन्थन के अमृत कलश की कहानी जोड़ी गयी। अर्धकुम्भ, पूर्णकुम्भ में विभक्त हुए। (1) सूर्य तथा सूर्य, चन्द्र मकर राशि में हों, गुरु वृषभ राशि में हो, अमावस्या हो, तो प्रयाग का कुम्भ माना गया। (2) गुरु कुम्भ राशि में हो, सूर्य तथा चन्द्र मेष राशि में हो, तब हरिद्वार कुम्भ जाना गया। (3) गुरु सिंह राशि में हो और सूर्य, रवि, चन्द्र कर्क राशि में हों, पूर्णिमा हो, तब नासिक का कुम्भ निश्चित किया गया। (4) सूर्य तुला राशि में हो गुरु वृश्चिक राशि में हो, तो यह योग उज्जैन के कुम्भ का प्रसिद्ध हुआ।

पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्यौ की सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य प्रदायक महत्ता को पृ पूरणे = पर्व, मिल संगमे= मेला, कु= पृथिवी, ताम्, उम्भ धारणे, उम्भति धारयति इति कुम्भः, यानी पर्व = पूर्ण, संगम = मेला, कुम्भ = धारण तीनों शब्दों में किसी से भी अभिव्यक्त करें, तीनों ही एकार्थक हैं। समस्त ब्रह्माण्ड की सुखमयता की अभिव्यक्ति ही इन शब्दों का तत्त्वतः मूलार्थ है। सृष्टि में जो –जो उपकारक तत्त्व हैं, वे सभी कुम्भ हैं, मात्र घट मृत योग ही नहीं। इस प्रकार यह सुनिश्चित है कि प्रयाग कुम्भ मेले आदि सृष्टि के आदि से चले अपने आयोजन नहीं हैं, इसलिए ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत में कुम्भ का वर्णन प्राप्त नहीं होता।

ऐसे ही कुछ कुम्भ विषयक ऐतिहासिक अन्वेषणा करने वाले इस वर्ष के प्रयाग माघ कुम्भ मेले के अवसर पर दैनिक हिन्दुस्तान 19 जनवरी 2007 पृ. 12 सम्पादकीय स्तम्भ में "माघ मेले को कुम्भ बनाती श्रद्धा का इतिहास" शीर्षक से कामा मैकलीन की 'द लास्ट बंगलो' पैंग्विन बुक्स से प्रकाशित पुस्तक से कुछ अंश प्रकाशित हुए, जो कुम्भ की यथार्थता को व्यक्त करते हैं।

प्रकाशित विचारों की लेखिका कामा मैकलीन के विचारों का निचोड़ है कि 12 वर्ष बाद या 6 वर्ष बाद मनाये जाने वाले कुम्भ माघ मेले आदि ही हैं, कुम्भ नहीं। 1860 से पूर्व कुम्भ का किसी भी सरकारी रिकार्ड में जिक्र नहीं है। यह कामा का शोध है।

'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित विषयक कामा मैकलीन के ऐतिहासिक तथ्य को निरस्त करने के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप 'कुम्भ पर्व का अनर्गल ऐतिहासिक विश्लेषण' शीर्षक से सुचिन्तक श्री धर्मशील जी चतुर्वेदी का मन्तव्य दैनिक गाण्डीव 3 जनवरी 2007 पृ.3 पर प्रकाशित हुआ है। जिसमें चतुर्वेदी जी ने यह प्रतिपादित करने का असफल प्रयास किया है कि कुम्भ पर्व का स्रोत वेद है। स्रोत स्थल के उदाहरण स्वरूप 'चतुरः कुम्भान् चतुर्धा ददामि' अथर्व. 4/34/7, 'पूर्णः कुम्भोऽधिकाल आहितः' (अथर्व. 19/53/3) मन्त्रों को उद्‌धृत किया है तथा लिखा है– ''अपनी ओर से कहना है, ऋ. 10/89/7, शुक्ल यजुर्वेद 19/87, सामवेद पू. 6/1/3 तथा अथर्ववेद 19/53/3 में स्पष्टतः कुम्भ योग माहात्म्य का वर्णन है।''

कुम्भ परम्परा की ऐतिहासिकता एवं प्रयागादि 4 स्थानों में कुम्भ स्थापन का वेद द्वारा चतुर्वेदी जी का विश्लेषण यथार्थ विश्लेषण से नितान्त परे हैं, यह कहने में कोई सन्देह या संकोच नहीं है क्योंकि वेदज्ञान सार्वदेशिक, सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक है। किसी देश विशेष, स्थान विशेष, काल विशेष, तीर्थ, नदी, नगर विशेष व व्यक्ति विशेष का नहीं है।

चतुर्वेदी जी द्वारा उद्‌धृत 'चतुरः कुम्भान् चतुर्धा ददामि' आदि मन्त्रों का प्रकरण छोड़कर अर्थ करना महती भ्रान्ति है। यह मन्त्र के चतुरः चतुर्धा शब्दों से स्पष्ट है– चतुर्धा शब्द पाणिनि के संख्याया विधार्थे धा. पा. 5/3/42 सूत्र नियम विधा = प्रकार आर्थ में निष्पन्न चार प्रकार का इस अर्थ का वाचक है। तो इस प्रकार अथर्व. 4/34/7 मन्त्र का सुस्पष्ट अर्थ यही हुआ –4 प्रकार के 4 कुम्भों को मैं देता हूँ। प्रकरण के अनुसार तथा मन्त्र के अग्रिम चरण 'क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना' के अनुसार वे 4 कुम्भ, क्षीरेण=दुग्धापूर्ण, उदकेन=उदकपूर्ण, दध्ना = दधिपूर्ण ये 3 कुम्भ तथा पूर्वोक्त षष्ठ मन्त्रोक्त घृत, मधु, सोम युक्त पात्र चतुर्थ कुम्भ के रूप में मन्त्र में वर्णित है। चतुर्थ प्रकार के घृतह्रदाः मधुकूलाः सूरोदकाः इन बहुवचनान्त शब्दोक्त पदार्थ का जाति रूप मानकर चतुर्थ कुम्भ रूप में यहाँ प्रतिपादन है। ये मन्त्रोक्त दधि, दुग्ध, उदक, सोम पदार्थ आयुष्य, आरोग्य, बुद्धि आदि सामर्थ्य को देने वाले हैं, प्रति जीवन के उपादेय हैं। जिनका परमात्मा ने मन्त्र में निर्देश किया है।

यहाँ तथ्य यह है कि मन्त्र के कुम्भ शब्द के साथ समुद्र मन्थन के कुम्भ की संगति नहीं लग सकती, क्योंकि समुद्र मन्थन का कुम्भ एक ही है तथा वह एक उदक प्रकार वाला ही है। दूसरी बात प्रयागादि 4 स्थानों में 1–1 कुम्भ स्थापित नहीं है, अपितु कुम्भ की पृषत् = बूँदें ही गिरी हैं जबकि मन्त्र में तो 4 कुम्भों के देने का वर्णन है। इस प्रकार मन्त्र के इस विश्लेषण में निःसंदेह है कि प्रयाग, उज्जैन आदि के कुम्भों की स्थापना में चतुरः कुम्भानमन्त्र की संगति लगाना ही चतुर्वेदी जी की भ्रान्तिपूर्ण अवधारणा है, निग्रह स्थान से ग्रस्त है। धर्मशील चतुर्वेदी जी ने अपने कुम्भ परक अर्थ संगति पोषण में वेदाचार्य पं. वेणीराम शर्मा गौड़ का कुम्भ समर्थक भाष्य उद्‌धृत किया है वह भी प्रकरण विरुद्ध होने से उपेक्ष्य है।

सायणाचार्य ने भी इस मन्त्र का क्षीरादि द्रव्यपूर्ण कलशपरक अर्थ किया है प्रयाग आदि कुम्भ परक नहीं, यथा– क्षीरादिद्रव्येण पूर्णान् चतुरः कुम्भान् चतुर्धा प्रागादिदिग्भेदेन चतुष्प्रकारं दधामि दिक्षु निदधामि। एताः क्षीरादिधाराः त्वाम् उपयन्तु इत्यादि योज्यम्। (अथर्व. 4/34/7)।

अर्थात् क्षीरादि द्रव्यों से पूर्ण 4 कुम्भों को पूर्व आदि दिशाओं के भेद से 4 प्रकार के कुम्भों को 4 प्रकार वाली दिशाओं में रखता हूँ। ये क्षीर आदि की धाराएँ तुम्हें प्राप्त हो। अन्यच्च विद्वान् चतुर्वेदी जी की अथर्ववेद (19/53/3) मन्त्र के साथ पूर्ण कुंभ के काल की संगति लगाना भी मिथ्या है, प्रकरण के विरुद्ध है। अथर्ववेदीय मन्त्र है–

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहिस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः। स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ् कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥ *(अथर्व. 19/53/3)।*

यह मन्त्र जिस सूक्त का है उस सम्पूर्ण सूक्त का देवता काल है, जो परमात्मा, समय, भुवन, राशि, आदि का वाचक है। इस मन्त्र में परमात्मा, अहोरात्र आदि रूप संवत्सर काल तथा कुम्भ राशि का वर्णन है। यह इसी सूक्त के 8वें मन्त्र से स्पष्ट है। यथा– कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः, (अथर्व. 19/53/8) अर्थात् निश्चय के कालरूप परमात्मा सारे जगत् का ईश्वर है, जो प्रजा के पालक अग्नि का (एष वै प्रजापतिर्यदग्नि तै. ब्रा. 1/1/5/5) पिता है। सायण के शब्दों में मन्त्र का अर्थ है–

सम्पूर्ण जगत् के कारणभूत नित्य अवच्छिन्न रहित परमात्मा के स्वरूप में सर्वत्र व्याप्त कुम्भ अहोरात्र, मास, ऋतु, संवत्सरादि रूप अवच्छिन्न कुम्भ रूप उत्पन्न योग्यकाल (कुम्भराशि काल) निहित है। उस उत्पन्न योग्य काल को सत्पुरुष नाना प्रकार के अहोरात्र आदि भेद से अनुभव करते हैं। प्रसिद्ध वह काल इन परिदृश्यमान सम्पूर्ण भूत जातों में अभिमुख हो के व्याप्त है। वह काल उत्कृष्ट सांसारिक सुख, दुःखादि द्वन्द्व दोषों से रहित, आकाशवत् व्याप्त, विविध प्रकार की रक्षा करने वाले, परमान्द प्रदायक रूप वाले स्वरूप में वर्तमान है, यह विद्वान् कहते हैं। सायणाचार्य के अर्थ से सुस्पष्ट है कि इस मन्त्र में 12 वर्ष में मनाये जाने वाले पूर्ण कुम्भ का कथन नहीं है अपितु संवत्सर के मध्य आने वाले अहोरात्र, मास, ऋतुकुम्भराशि आदि कालों का वर्णन है जो सदा वर्तमान परमात्मा में स्थित है। माननीय चतुर्वेदी जी ने इस मन्त्र को पूर्ण कुम्भ के काल में संगत कर वेद ज्ञान को एकांगी, देश विशेष, स्थान विशेष का बना दिया। कुम्भों की महनीयता में मान्य चतुर्वेदी जी के ऋ. 10/ 89/7 यजु. 19/87 तथा साम. 489 मन्त्रों के उद्धरण भी भ्रमजन्य हैं। ऋक्मन्त्र इस प्रकार है–

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज णुरो अरदन्न सिन्धून्। बिभेद गिरिं नवमित्र कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः॥ *(ऋ. 10/89/7)*

यह मन्त्र जिस सूक्त का है उसमें वृष्टि की वैज्ञानिक प्रक्रिया का प्रतिपादन है। मन्त्र में आया 'कुम्भ' शब्द 'कुम्भ मेला' अर्थ का वाचक नहीं है अपितु 'कुम्भ' शब्द मेघ की उपमा के लिए है। जैसे कि सायण ने व्याख्या की– गिरिं मेघम् नवं= नवमिव, कुम्भं कलशां बिभेद, इत् =भिनत्येवा॥ (ऋ.सा. भा. 10/89/7)।

अर्थात् मेघ को नये घड़े के समान तोड़ देता है इन्द्र = विद्युत अपने मरुत्गणों के द्वारा। यजुर्वेदीय मन्त्र भी कुम्भ मेले का प्रतिपादक नहीं है।

– शेष पृष्ठ 7 पर

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (20)

स्वात्मना चोत्तरयोः ॥20॥

अर्थ– (स्वात्मना) अपनी आत्मा के साथ (संबंधित होने के कारण) (च) ही (उत्तरयोः) पूर्व कथित दोनों बातें (गति) जाना और (आगति) आना के आत्मा के साथ संबंधित होने के कारण आत्मा अणु परिमाण सिद्ध होती है।

भावार्थ– सूत्रकार बताना चाहते हैं कि पिछले सूत्रों में कही हुई बातों में उत्क्रांति (निकलना) गति और आगति का संबंध जीवात्मा से है, क्योंकि वही पूर्वोक्त क्रियाओं का कर्ता है। उत्क्रान्ति तो विभु (व्यापक) आत्मा के शरीर का स्वामित्व छूट जाने पर शरीर का नाश हो जाने से आत्मा का शरीर पर स्वामित्व नहीं रहता, परन्तु गति (जाना) और आगति (आना) आदि क्रियाओं का संबंध तो स्पष्ट ही आत्मा से है। व्यापक आत्मा में जाना, आना क्रियाएँ सम्भव नहीं हैं। इस दृष्टि से जब आत्मा अणु परिमाण सिद्ध होता है तो उत्क्रान्ति (निकलना) भी मुख्यरूप से आत्म का ही होना चाहिए। उसे गौण समझना ठीक नहीं। इसके अतिरिक्त जो पदार्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर आएगा या जाएगा वह एकदेशीय (परिच्छन्न) ही होगा। वह विभु (व्यापक) नहीं हो सकता जो विभु अर्थात् सर्वव्यापक है। वह कहाँ आएगा और कहाँ जाएगा?

अतः यह सिद्ध होता है कि इससे पहले सूत्र में बताए गए गति (जाना) और आगति (आना) क्रियाओं का कर्ता जीवात्मा परिच्छन्न, एकदेशीय तत्त्व है।

शिष्य आशंका करता है कि शास्त्रों और श्रुति में जहाँ आत्मा को अणु कहा है वही उसे महान् भी कहा है "अणोरणीयान् महतो महीयान्" जब वह महान् है तो अणु क्यों माना जाए? इन दोनों की संगति कैसे बैठेगी? सूत्रकार शिष्य की आशंका का समाधान अगले सूत्र में करेंगे।

– डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व में आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं, आदर्शों, नियमों को फैलाने में प्रयासरत

दिल्ली सभा की भावी योजना – (6)

नेत्रहीनों के लिए ब्रेल लिपि में सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन

विश्व के पौने चार करोड़ नेत्रहीनो में से भारत में डेढ़ करोड हैं नेत्रहीन

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का यह कथन तथा 'वेदेषु सर्वाः विद्याः सन्ति मूलोद्देश्यतः' महर्षि मनु की यह घोषणा हम आर्यों के लिए आप्त प्रमाण कोटि का सच है। महर्षि मनु 'वेद प्रतिपादितो धर्मः' कहकर वेदादेश के पालन करने को धर्म मानते हैं। वेद का स्पष्ट आदेश है कि 'हे मनुष्यो! विद्या निधि के परे श्रेष्ठ सुख देने वाला धन कोई भी तुम मत जानो"। (ऋ. 1.116.11) 'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते' कहकर महर्षि मनु विद्या के दान को सबसे बड़ा दान मानते हैं। आर्यसमाज अपने प्रारम्भिक काल से ही वेद–विद्या का प्रचार–प्रसार करता चला आ रहा है। हमने वेद ज्ञान के सम्बन्ध में पौराणिक परम्परा से चली आ रही समस्त संकीर्णताओं को तोड़कर वेदों को मानव मात्र के लिए सुलभ बना दिया है। आज बिना किसी जातीय भेदभाव के सब स्त्री–पुरुष वेद विद्या का लाभ ले रहे हैं। इतना सब कुछ करने पर भी जब हम विचार करते हैं तो हमें कुछ अधूरापन–सा प्रतीत होता है। संचार माध्यमों से छानबीन करने पर पता चला कि सन् 2007 में भारत में लगभग1.5 करोड़ लोग नेत्रहीन थे तथा विश्व में इनकी संख्या लगभग पौने चार करोड़ के आसपास थी। जमीनी सच्चाई की बात करें तो यह संख्या अधिक हो सकती है। ऋग्वेद के सातवें मण्डल के निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर हृदय आनन्द से भर उठा। **सच में वेद का श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय करना बड़ा आनन्ददायक है। ज्ञान–विज्ञान के विविध क्षेत्रों की ऐसी विलक्षण विद्याएं वेदों में भरी पड़ी हैं कि विद्या व्यसनी मनुष्य उन्हें पाकर धन्य हो जाता है।** हम जिस मन्त्र की चर्चा कर रहे थे, उसका आनन्द 'आर्य सन्देश' के सुधी पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

ओं उप त्त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः! उपाक्षरा सहस्रिणी।।

(ऋ.7.15.9)।

पदार्थः– हे विद्यार्थिनि! जैसे, **विप्रासः** बुद्धिमान, **नरः** = मनुष्य, **धीतिभिः** = अंगुलियों से, **अक्षरा** = अकार आदि अक्षरों को, **उपयन्ति** = उपाय से प्राप्त करते हैं, वे जो कन्या, **सहस्रिणी** = असंख्य विद्या विषयों को जानने वाली है, उसको जानें, वैसे, **त्त्वा** = आपके, **सातये** = सम्यक् विभाग के लिए बुद्धिमान् मनुष्य, **उप** = समीप प्राप्त हों।

भावार्थः– जैसे अंगूठा और उंगलियों से अक्षरों को जानकर विद्वान् होता है वैसे ही विद्वान् लोग शोधन कर विद्या के रहस्यों को प्राप्त करें।

यहाँ मन्त्र के शब्दार्थ और भावार्थ महर्षि के ज्यों के त्यों लिए गए हैं। शब्दार्थ और भावार्थ से एकदम स्पष्ट है कि यहाँ नेत्रहीन स्त्री–पुरुषों को विद्या पढ़ाने की बात कही है। जो आँखों से नहीं देख सकते, वे उगंलियों के स्पर्शपूर्वक अक्षर ज्ञान प्राप्त करें। विद्वान जन ऐसी विधि विकसित करें, इस दिशा में शोध करें कि ऐसा कैसे किया जा सकता है। हम यहाँ देख रहे हैं कि वेद के माध्यम से परमात्मा ने यह आदेश दिया है कि नेत्रहीन जनों को भी विद्या पढ़ाई जाए। यह हम पूर्व में बता चुके हैं कि भारत में लगभग डेढ़ करोड़ नेत्रहीन हैं। ऐसी विभिन्न योजनाओं के सम्बन्ध में 'आर्यसन्देश' में जानकारी दी जाती रही है। जब सभा ने नेत्रहीन लोगों के लिए ब्रेललिपि में सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन की जानकारी दी तो इस वेदादेश का स्मरण हो आया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा इस ऐतिहासिक सौभाग्य को प्राप्त करने जा रही है। आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द को ऋषि परम्परा से व्याकरण विद्या पढ़ाकर वेद के सत्य–अर्थ को प्राप्त करने की क्षमता देने वाले एक प्रज्ञा चक्षु ही थे। बचपन में नेत्र ज्योति खो चुके स्वामी विरजानन्द जी की बौद्धिक प्रतिभा का वर्णन किन शब्दों में किया जा सकता है। पता नहीं प्रभु की क्या निराली व्यवस्था है कि नेत्र ज्योति से रहित जन बुद्धि के बड़े मेधावी होते हैं। सामान्य रीति से भी आज किसी नेत्रहीन से मिलकर यह अनुभव किया जा सकता है। एक नेत्रहीन साधु गायत्री साधना व प्रभु कृपा के सहारे ज्ञान पिपासु दयानन्द को ज्ञान चक्षु देकर भारतीय पुनर्जागरण का पुरोधा बना सकते हैं, तो सत्यार्थप्रकाश का ब्रेल में प्रकाशन होने पर कितने प्रज्ञा चक्षु संसार का कितना कल्याण कर सकते हैं? आर्यसमाज तो इस प्रज्ञा चक्षु वर्ग का ऋणी है। सभा इस दिशा में पुण्य प्रयास करके एक बहुत बड़े वर्ग को वेद विद्या से परिचित कराने का सौभाग्य अर्जित करने जा रही है। इस महान् योजना में सब आर्यों को हाथ बढ़ाकर सहयोग करना चाहिए। सभा ने नेत्रहीनों के लिए सत्यार्थप्रकाश को ब्रेललिपि में प्रकाशित कराने के लिए 'राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान' – जो सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय भारत सरकार के अधीन काम करता है, से पत्राचार किया।

संस्थान की ओर से सभा को जो आँकड़े मिले हैं, उनके अनुसार सत्यार्थप्रकाश की सौ प्रतियों को ब्रेल लिपि में तैयार करवाने पर –1,63,380 रुपये का व्यय आता है। श्रीमद्दयानन्द प्रकाश (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित) की सौ प्रतियों का व्यय 1,49,625 रुपये है। कुल व्यय 3,13,005 रुपये है। संस्थान का कहना है कि इस प्रकाशन में 6 से 8 माह तक का समय लगेगा तथा व्यय का 90 प्रतिशत अग्रिम देना होगा। सभा द्वारा प्रेषित पत्र के उत्तर में संस्थान का इस आशय का पत्र सभा को प्राप्त हो चुका है। अब प्रतीक्षा है हमारे श्री सम्पन्न सहयोगी आर्यों के उदार सहयोग की। सभा को आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस महान् उपकारी अभियान की सफलता के लिए उत्साही आर्यों का भरपूर सहयोग पूरी उदारता के साथ मिलेगा। कितना आनन्द देने वाला अवसर होगा, जब हम सब आर्य जन मिलकर एक नई दुनिया तक महर्षि के मन्तव्यों को पहुँचाने वाले सत्यार्थप्रकाश के ब्रेल संस्करण का हर्षोल्लास के साथ लोकार्पण करेंगे। अन्धकार से आच्छादित नेत्रहीनों के संसार में सत्यार्थप्रकाश की ज्ञान किरणें जब सम्पूर्ण छटा के साथ बिखरकर एक नई प्रभात बेला लाएँगी। श्री कृष्ण कहते हैं 'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते' अर्थात् ज्ञान के समान जीवन को पवित्र करने वाली कोई वस्तु संसार में नहीं है। जन्मजात अन्धकार में आजीवन जीने वाले डेढ़ करोड़ लोगों को ज्ञान बाँट कर उनके जीवन को पवित्र करने का पुण्य प्राप्त करना निश्चित ही एक बड़ा दुर्लभ सौभाग्य होगा। इस सौभाग्य के भागीदार बनने व उसका सच्चा सुख लाभ पाने के लिए हम सबको इस अभूतपूर्व पुण्य कार्य में भरपूर सहयोग देना चाहिए! यद्यपि इसका आनन्द समस्त आर्यों को मिलेगा लेकिन जो सार्थक सहयोग करने के लिए खुले हृदय से आगे आएंगे, उनको जो दिव्य आनन्द मिलेगा उसका लाभ वे ही जान सकेंगे। आओ, हम सब मिलकर इस आनन्द के भागीदार बनने के लिए कुछ ठोस कदम उठाएँ।

जो कोई आर्यसमाज या दानी महानुभाव इसमें 100 प्रतियों के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग करना चाहें तो सभा इसके लिए उन्हें आमन्त्रित करती है। यह कार्य आप सबके विशेष सहयोग से ही सम्भव है।

– रामनिवास 'गुणग्राहक'
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
9015035765, 9540076090

– जारी पृष्ठ 5 पर

–: एक निवेदन :–

इन योजनाओं की रूपरेखा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत पहले से बना रही थी। इन्हें अब मूर्तरूप दिया जा रहा है। श्री रामनिवास जी गुणग्राहक इन योजनाओं को लेखबद्ध रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कार्य में आचार्य श्री हरिप्रसाद जी भी सहयोग कर रहे हैं। सम्माननीय पाठकों से निवेदन है कि सभा द्वारा तैयार की जा रही इन योजनाओं में यदि वे किसी प्रकार भी सहयोगी बनना चाहें अथवा सुझाव देना चाहें तो वे आचार्य श्री रामनिवास जी अथवा आचार्य श्री हरि प्रसाद जी से सभा कार्यालय –15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 दूरभाष – 23360150, 23365959 पर सम्पर्क करें। आपके सुझावों, विचारों का हम हृदय से स्वागत करेंगे। – विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली का उत्सव संपन्न

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली का उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 18 से 21 मार्च तक प्रभात फेरी निकाली गयी। 22 से 27 मार्च तक यज्ञ–प्रवचन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. सोमदेव ने प्रवचनों और श्री दिनेश जी (अमृतसर) भजनों द्वारा वैदिक मान्यताओं को प्रस्तुत किया। सायंकालीन कार्यक्रम में कीर्तिनगर के विभिन्न पार्कों व एक दिन रामगढ़ में सांय 6.45 बजे डॉ. ऋषिपाल शास्त्री (धर्माचार्य) जी ने यज्ञ कराया। 28 मार्च को प्रातः 8 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। इसमें अनेक आर्यों ने भाग लिया। भवन के नीचे वाले हॉल में डॉ. सोमदेव जी तथा श्री सत्यपाल पथिक जी द्वारा आर्यसमाज कीर्तिनगर की मल्टीमिडिया व्यवस्था का शुभारम्भ भजन द्वारा किया गया। आर्य सम्मेलन में श्री विनय आर्य (महामन्त्री, आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली) ने अपने विचार प्रकट किये।

इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश शास्त्री द्वारा रचित 'गायत्री शतक' नामक एक लघु पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

–सतीश चड्ढा,
मंत्री

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली ने मनाया आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली द्वारा 21मार्च, 2010 को आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर आर्यसमाज टैगोर गार्डन ए. सी. ब्लॉक में मनाया गया। आचार्य इन्द्रदेव (ब्रह्मा) एवं सहयोगी आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ संपन्न कराया। सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़) ने की। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री शिवभगवान लोहाटी, कीर्तिनगर विशिष्ट अतिथि थे। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्या सुनीति आर्या, स्वामी धर्ममुनि जी ने नवसंवत्सर एवं महर्षि दयानन्द के ईश्वर चिन्तन को प्रस्तुत किया। श्री राजीव आर्य, महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला आर्यसमाज कीर्तिनगर, टैगोर गार्डन ए.सी. ब्लॉक एवं जनकपुरी ए ब्लॉक की महिलाओं ने भजन प्रस्तुत किए। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं आर्य नेता श्री धर्मपाल जी आर्य का विशेष सम्मान स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा शॉल भेंटकर किया गया। श्रीमती संतोष कपूर का भी आर्यसमाज के प्रचार में उनके योगदान पर विशेष सम्मान आचार्या सुनीति आर्या द्वारा शॉल ओढ़ाकर किया गया। कार्यक्रम में मंडल के अधिकारी, सदस्य एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य इन्द्रदेव जी एवं श्री वीरेन्द्र सरदाना ने किया।

– सुरेन्द्र बुद्धिराजा, प्रधान

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली द्वारा आयोजित नव सम्वत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्यनेता श्री धर्मपाल आर्य जी का विशेष सम्मान किया गया। साथ में हैं सर्वश्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, रवि चड्ढा, विक्रम नरुला, स्वामी धर्ममुनि, शिवभगवान लाहोटी, राजेन्द्र लाम्बा एवं श्रीमती सुनीति आर्या।

सत्यार्थप्रकाश प्रवचन माला संपन्न

16 मार्च से 24 मार्च तक महिला आर्यसमाज अशोक नगर द्वारा सत्यार्थप्रकाश प्रवचन माला का आयोजन किया गया। पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अधिष्ठाता आचार्य इन्द्रदेव जी ने नौ दिनों तक प्रवचन एवं शंका समाधान किया। इस अमूल्य ग्रन्थ का नित्य स्वाध्याय का संकल्प अनेक माताओं ने आचार्य जी से किया। कार्यक्रम में महिला वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली की प्रधाना श्रीमती सरोजनी सचदेवा एवं श्रीमती विमला मलिक ने अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला मंडल की समस्त समाजों ने इसे सफल बनाने में सहयोग दिया। महिलाओं ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन महिला समाज की प्रधाना श्रीमती अनिता शर्मा एवं मन्त्राणी विमला अरोड़ा ने संयुक्त रूप से किया।

– अनिता शर्मा, प्रधाना

नगालैण्ड एवं असम के आश्रमों का निरीक्षण करने के लिए माता प्रेमलता जी शास्त्री असम रवाना

नगालैण्ड एवं असम के आश्रमों का निरीक्षण करने के लिए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दो प्रतिनिधि मंडलों में से एक प्रतिनिधि मंडल माता प्रेमलता जी शास्त्री (महामंत्री, अ.भा. द.से. सं.) के नेतृत्व में 1 अप्रैल की रात्रि में असम के लिए रवाना हुआ। उनके साथ श्री वेदव्रत जी (प्रधान अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ) की पत्नी श्रीमती ईश्वर रानी, कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल जी एवं उनकी पत्नी शामिल हैं। दूसरा प्रतिनिधि मंडल श्री विनय आर्य (महामंत्री दिल्ली सभा) के नेतृत्व में 7 अप्रैल को सुबह रवाना होगा। इसमें जोगेन्द्र जी खट्टर (अ.भा. द.से. सं. दिल्ली प्रभारी), श्री सुरेन्द्र आर्य जी (रोहिणी), माता कृष्णा तनेजा जी शामिल हैं। ये प्रतिनिधि मंडल वहाँ पिछले 42 वर्षों से चल रहे आश्रमों का निरीक्षण करेंगे एवं उनके विकास की सम्भावनाओं पर विचार–विमर्श करेंगे। ये प्रतिनिधि मंडल एक दानी महानुभाव द्वारा उपलब्ध कराई गई120 बीघा भूमि (निकट दीमापुर) के लिए योजनाओं का प्रारूप तैयार करेंगे। माता प्रेमलता जी अपने प्रतिनिधि मंडल के साथ 12 अप्रैल को एवं श्री विनय आर्य अपने प्रतिनिधि मंडल के साथ 11अप्रैल को लौटेंगे।

– प्रैस सचिव

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल का
राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन

16 से 18 अप्रैल तक

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल द्वारा 16 से 18 अप्रैल तक राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भोपाल में आयोजन किया जा रहा है। 16 अप्रैल को ध्वजारोहण एवं यज्ञ के पश्चात् कार्यक्रम का उद्घाटन 10.30 बजे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे। वे सभा की स्मारिका का विमोचन भी करेंगे। मध्याह्न 2 से 5 बजे तक शोभायात्रा निकाली जाएगी। 17 अप्रैल को मध्याह्न 2.30 बजे 'आर्यसमाज की प्रासंगिकता एवं हमारी भूमिका' पर गोष्ठी होगी। 18 अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। मध्याह्न में 'वेद एवं पर्यावरण' पर गोष्ठी एवं रात्रि 9बजे से 11.30 बजे तक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। तीनों दिन प्रातः एवं सायंकाल भजन, उपदेश एवं प्रवचन भी होंगे। इसमें स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी देवव्रत जी, पं. वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय (दिल्ली), पं. नरेश दत्त जी शर्मा (बिजनौर) आदि विद्वान भाग लेंगे। इस अवसर पर योग गुरु स्वामी गणेशानन्द महाराज के सान्निध्य में निःशुल्क ध्यान योग शिविर लगाया जा रहा है। विशेष जानकारी के लिए **अतुल वर्मा (मो. 09893037916)** से सम्पर्क कर सकते हैं।

आप अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं एवं संगठन शक्ति का परिचय दें।

निवेदक : दलबीर सिंह राघव, संयोजक

प्रथम पृष्ठ का शेष

उन्होंने वहां पर दुकानें बनवाने के लिए पिलर आदि खड़े करा दिये। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री शिव शंकर जी गुप्ता ने तुरन्त इस बात को अपने संज्ञान में लिया और इसकी सारी रिपोर्ट सभा को उपलब्ध कराई। सभा ने इस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए उन लोगों के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई। सभा ने उन लोगों के द्वारा बनाई गई अवैध समिति को तत्काल भंग कर दिया एवं तदर्थ समिति बनाई। तदर्थ समिति का कार्य आर्यसमाज के कार्यों को सुचारु रूप से चलाना एवं अराजक तत्त्वों को आर्यसमाज में प्रवेश करने से रोकना था। सभा के सहयोग से ही वहाँ की आर्यसमाज अपने कार्यों को अच्छे ढंग से संचालित कर रही थी। सभा के सहयोग से उन अराजक तत्त्वों के खिलाफ मुकदमा किया गया। कड़कड़डूमा कोर्ट एवं तीसहजारी कोर्ट में अलग–अलग चले मुकदमे में सभा की बहुत शक्ति लगी। सौभाग्य का विषय है कि श्री धर्मपाल जी आर्य, श्री शिवशंकर जी गुप्ता के द्वारा किये गये अथक प्रयासों के पश्चात् ए.डी.जे. की कोर्ट से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को आदेश दिया गया–चूंकि झिलमिल कालोनी आर्यसमाज दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध है अतएव यह सभा झिलमिल कालोनी आर्यसमाज के लिए चुनाव अधिकारी नियुक्त करे और दो महीने में चुनाव प्रक्रिया पूरी कर कोर्ट को सूचित करे। साथ ही कोर्ट ने एडवोकेट श्री राजेश बवेजा को इस चुनाव के निमित्त अपना पर्यवेक्षक नियुक्त कर दिया। दिल्ली सभा द्वारा झिलमिल कालोनी आर्यसमाज का चुनाव कराने के लिए श्री ईश नारंग जी को मुख्य चुनाव अधिकारी एवं श्री जगदीश मल्होत्रा, श्री गजेन्द्र सक्सेना को सहायक चुनाव अधिकारी मनोनीत किया गया। 1अप्रैल, 2010 को कोर्ट के आदेश से चुनाव कराया गया। इसके लिए सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस का बन्दोबस्त भी किया गया था।

विशेष– आर्यसमाज झिलमिल कालोनी की सम्पत्ति अराजक तत्त्वों के हाथों में जाने से इसलिए बच सकी कि वहाँ के अधिकारियों ने इस पर तुरन्त संज्ञान लेते हुए सभा को सूचित किया। सभा ने भी पूरी तत्परता से मुकदमे की कार्यवाही की। इसके फलस्वरूप कोर्ट के सहयोग से यह सम्पत्ति पुनः आर्यसमाज झिलमिल कालोनी को प्राप्त हो गई। अतः सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे आर्यसमाज की सम्पत्ति के संरक्षण के लिए सदैव सजग, सावधान और तत्पर रहें। दिल्ली सभा आर्यसमाज झिलमिल कालोनी के नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देती है और आशा करती है कि वहाँ की आर्यसमाज पहले से भी अधिक सक्रिय होकर आर्यसमाज के कार्यों को करेगी और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में सहयोग करेगी। आर्यसमाज की सम्पत्तियों का संरक्षण तभी संभव है जब उस समाज के पदाधिकारी मिलजुल कर आर्यसमाज के नियमों एवं उपनियमों के तहत कार्य करेंगे। यदि किसी प्रकार की विघ्न–बाधायें आती हैं तो तत्काल संज्ञान लें और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को उसकी सूचना दें ताकि समय रहते उन्हें दूर किया जा सके।

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी का निर्वाचन कराते सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी तथा कोर्ट द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक। नव निर्वाचित अधिकारियों के साथ चुनाव अधिकारी एवं सदस्यगण। निर्वाचन में में उपस्थित आर्यसमाज झिलमिल कालोनी के घोषित सभासद।

तिहाड़ जेल में यज्ञ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अरमान संस्था के तत्वावधान में 31 मार्च 2010 को यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त तीन युवा बन्दियों ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आचार्य इन्द्रदेव जी ने अपने उद्बोधन में उन्हें सदाचारी बनने की प्रेरणा दी। आर्य डॉ. ओमप्रकाश ने बन्दियों को अपने जीवन को सुधारने पर जोर दिया। श्रीमती नीरु आर्या ने बन्दियों के शीघ्र छूटने की प्रार्थना की तथा कम्प्यूटर, पेन्टिग, बुनाई इत्यादि में भाग लेने का आग्रह किया।

आर्यसमाज सी– हरी नगर घंटाघर का

37वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सी– हरी नगर घंटाघर का 37वाँ वार्षिकोत्सव 9 से 11 अप्रैल तक हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। इस अवसर पर महात्मा राम किशोर जी के ब्रह्मत्व में सामवेद शतक यज्ञ का अयोजन किया गया है। इस अवसर पर पंडित धूम सिंह शास्त्री के भजन एवं आचार्य श्री रामनिवास गुणग्राहक जी के प्रवचन होंगे। 11 अप्रैल को पूर्णाहुति होगी एवं श्री आनन्द प्रकाश वर्मा का सम्मान किया जाएगा। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा (प्रधान वेद प्रचार मंडल पश्चिमी क्षेत्र दिल्ली) भाग लेंगे।

– ओमदत्त गौतम, प्रधान

वैवाहिक – सेवा

Caring, working bride for fair, handsome and established hearing impaired Artist & Graphic Designer [Bisa Agarwal, 30 Years, 5' 5"), from a highly reputed, cultured and well connected family living in a posh south Delhi colony. Boy wears digital hearing aids, can converse in Hindi & English and drives a car / motorcycle. Girl should be from similiar background but not hearing impaired. Caste is no bar.***Cont: 9654319048***

आर्यसमाज ईस्ट ऑफ कैलाश के भवन का उद्घाटन समारोह 18 अप्रैल, 2010

आर्यसमाज ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली–48 द्वारा नवनिर्मित भवन का उद्घाटन 18 अप्रैल को होगा। इसमें आप सब सादर आमंत्रित हैं। *– महामन्त्री*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का

राष्ट्रीय शिविर

6 जून से 13 जून अजमेर में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल द्वारा व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण को लेकर 6 जून से 13 जून तक शुक्ला गार्डन, आर्दश नगर, अजमेर में लगाया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन 6 जून सायंकाल 5 बजे होगा। कन्याओं को शरीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, हस्तकला, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना शिविर लगाने का लक्ष्य है। सभी प्रान्तीय सभाओं व जिला समाजों से जहां–जहां वीरांगना दल की शाखाएं लगती हैं वे अपनी चुनी कम से कम दो वीरांगना जो कम से कम दो शिविरों में शामिल हुई हों, को इस शिविर में भेजकर इसका लाभ उठाएं।

शिविर में सैकड़ों कन्याएं भाग लेंगी अत: आर्यजनों ने निवेदन है कि वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं एवं कार्यक्रम को सफल बनाएं।

विशेष जानकारी के लिए **साध्वी उत्तमा जी (पूर्वनाम श्रीमती उज्ज्वला वर्मा) से 9582385950(दिल्ली), 09672286863 (अजमेर)** पर सम्पर्क करें।

– संयोजक

शोक समाचार प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की प्रधाना

श्रीमती शकुन्तला दीक्षित का निधन

श्रीमती शकुन्तला दीक्षित धर्मपत्नी स्वर्गीय स्वामी श्री विद्यानन्द जी सरस्वती (पूर्वनाम श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित) का 5 अप्रैल, 2010 को निधन हो गया। वे लगभग 84 वर्ष की थीं। वे 27 मार्च को आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की कन्याओं के समावर्तन संस्कार में भाग लेने गयी थीं। 28 मार्च को वे वहीं अस्वस्थ हो गयीं। उन्हें तत्काल एक निजी चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। उन्होंने 5 अप्रैल को 12.50 बजे वहीं अंतिम सांस ली।

उनकी अंत्येष्टि उसी दिन सायंकाल निगमबोध घाट पर वैदिक रीति से कर दी गयी। इस अवसर पर दिल्ली की अनेक महिला आर्यसमाजों की सदस्या, पदाधिकारी एवं प्रतिष्ठित महिलाएं उपस्थित थीं। वे अपने पीछे सुपुत्र श्री प्रमोद दीक्षित–श्रीमती मंजू दीक्षित, श्री आनन्द दीक्षित–श्रीमती सरोज दीक्षित, डॉ. अरुण दीक्षित– डॉ. (श्रीमती) मीरा दीक्षित एवं सुपुत्री डॉ. (श्रीमती) सुषमा शर्मा– श्री हरीशचन्द्र शर्मा, श्रीमती पूर्णिमा शर्मा– श्री मनमोहन शर्मा सहित अनेक पौत्र–पौत्रियां, धेवता और धेवतियां छोड़ गयी हैं।

वे आजीवन आर्यसमाज से जुड़ी रहीं। वे अनेक वर्षों तक प्रान्तीय आर्य महिला सभा की महामंत्री रहीं। वर्तमान में वे इस सभा की प्रधाना थीं। उन्होंने कलकत्ता से काव्यतीर्थ की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वे जन्म से ही आर्य विचारों वाली थीं। वे वैदिक धर्म की मर्मज्ञ थीं। उनमें संगठन एवं नेतृत्व की अपूर्व क्षमता थी। उनकी वक्तृत्व शैली अति प्रभावी थी। वे समाजसेवा में हमेशा आगे रहती थीं। उन्होंने समाज सेवा के साथ–साथ अपने घर के उत्तरदायित्वों को बहुत ही कुशलता से पूरा किया।

स्वामी जी के निधन के बाद माता जी सर्वात्मना आर्यसमाज और समाजसेवा में जुट गयी थीं। उनका अधिकांश समय आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की कन्याओं के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में व्यतीत हुआ। यहां तक कि उन्होंने अपना अंतिम समय अपनी प्रिय कर्मस्थली में बिताया। उन्होंने अपनी सन्तानों को बचपन से ही आर्यसमाज के संस्कार दिये और उन्हें आर्यसमाज से जोड़ा। उनकी सुपुत्री डॉ. सुषमा जी से आर्य जगत् परिचित ही है। उनके निधन पर दिल्ली और उसके आसपास की आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं अनेक संगठनों के साथ–साथ कई गणमान्य महानुभावों ने गहरा शोक प्रकट किया है।

श्रीमती प्रवेश कुमारी का निधन

दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर के प्रधान एवं आर्यसमाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री बलदेव राज आर्य की 44 वर्षीया सुपुत्री श्रीमती प्रवेश कुमारी का निधन 30 मार्च 2010 को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गयी।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य एवं आर्य दिल्ली प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य सहित अनेक आर्यसमाजों के सदस्य,पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। वे लगभग 6 महीने से अस्वस्थ थीं। उनके निधन पर दिल्ली की अनेक समाजों एवं प्रतिष्ठित लोगों ने गहरा शोक प्रकट किया है। वे अपने पीछे पति श्री चंदन गिरधर, पुत्र हितेश, पुत्री हिना को छोड़ गई हैं। वे आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्त्ता थीं। वे आर्यसमाज रोहिणी सै. –4 की संस्थापक सदस्य थीं। वे ईस्ट पटेल नगर स्थित सनातन धर्म गर्ल्स सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में कार्यरत थीं। वे प्रतिदिन हवन करती थीं। वे बहुत ही धार्मिक, उदार एवं दयालु थीं। उन्होंने अपनी सेवा के आरम्भिक दिनों में एक हृदय रोगी की चिकित्सा के लिए दिन रात एक करके उसके इलाज के निमित्त खर्च होने वाली सारी धन राशि एकत्रित की थी।

स्वामी श्री भगवतानन्द जी का देहावसान

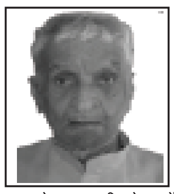

31मार्च 2010 को रात्रि में स्वामी श्री भगवतानन्द जी (पूर्व नाम भगवान दास जी) का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज के कर्मठ प्रचारक थे। वे आर्यसमाज बी–ब्लॉक जनकपुरी और अशोक नगर आर्यसमाज से बहुत लम्बे समय से जुड़े हुए थे। वे आर्यसमाज बी–ब्लॉक के 10 वर्षों तक मंत्री भी रहे। वे बहुत ही निष्ठावान एवं ईश्वर में विश्वास रखने वाले थे।

वे सरकारी सेवा में गजटेड अधिकारी थे। संन्यास लेकर वे वर्षों से वैदिक साधना आश्रम देहरादून में सेवारत थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।–*सम्पादक*

श्री बांकेलाल कंसल का सौवां जन्मदिवस समारोह

4 से 10 अप्रैल, 2010

गाँधीवादी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कुमाऊँ में आर्यसमाज के स्तम्भ श्री बांकेलाल कंसल जी का सौवाँ जन्मदिवस समारोह 4 अप्रैल से 10 अप्रैल 2010 तक मनाया जा रहा हैं। श्री कंसल जी आर्यसमाज के संरक्षक हैं। उन्होंने 1972 से 1980 तक आर्य उपप्रतिनिधि सभा कुमाऊँ मंडल का प्रधान रहते हुए आर्यसमाज का प्रचार–प्रसार बड़ी तत्परता से किया। वे महात्मा नारायण स्वामी जी के सान्निध्य में रहे। उन्होंने 22 फरवरी 1972 ई0 को ढिकुली में दयानन्द कीर्तिस्तम्भ स्थापित करने में सराहनीय सहयोग दिया। आप17 वर्ष नगरपालिका नैनीताल के सदस्य रहे। आपने उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और उपकोषाध्यक्ष के पद को भी संभाला।1974 में आर्यसमाज शताब्दी समारोह में आपकी प्रमुख भूमिका रही। इनके प्रयत्न से आर्यसमाज नैनीताल में आर्यसमाज के पाँच कर्मठ वृद्धों का सम्मान समारोह किया गया। सन् 1990 से आपके सहयोग से प्रतिवर्ष कम से कम चार नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविरों का आयोजन करके ग्रामीण अंचल के गरीब असहाय जनों की सेवा की जाती है।

आपके घर में प्रतिदिन यज्ञ होता है। नैनीताल में होने वाले अधिकांश समारोह में आपकी उपस्थिति देखी जाती है। इस अवस्था में भी अपने स्वस्थ जीवन से सभी को प्रेरणा प्रदान करते हैं। इनकी आत्मशक्ति, आत्मविश्वास, सेवाभाव, परोपकारी वृत्ति, सामाजिक सद्भाव, अनुकरणीय है।

आर्यसमाज नैनीताल सभा श्रद्धावान मनीषियों से निवेदन करता है कि इस समारोह में अपनी सहभागिता पर कृतार्थ करें। प्रबुद्ध पाठक जनों से निवेदन है कि उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क के संस्मरणों को लिपिबद्ध करते हुए सूचित कर सकें तो हम आपके आभारी रहेंगे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

– जारी पृष्ठ 5 प

शहीद दिवस मनाया गया

आर्यसमाज प्रीत विहार, पूर्वी दिल्ली की अन्य आर्यसमाजों के सहयोग से आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश (दक्षिण पूर्वी मंडल) द्वारा 23 मार्च, 2010 को सायंकाल 4 से सायं 7 बजे तक श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पार्क, प्रीत विहार दिल्ली–92 में शहीद दिवस मनाया गया। श्री बलदेव राज (उद्योगपति) कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने वैदिक धर्म एवं शहीदों की जीवनी से संबंधित प्रश्न वैदिक शिक्षा केन्द्र, प्रीत विहार के छात्रों, अध्यापिकाओं और उपस्थित आर्यजनों से पूछे एवं विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया।

इस अवसर पर आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओं ने शहीदों की जीवनी पर आधारित नाटक का मंचन किया। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की गयी।

– आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर

आर्यसमाज नरकटियागंज प० चम्पारण में

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ संपन्न

आर्यसमाज नरकटियागंज प0 चम्पारण (बिहार) द्वारा 15 से 18 मार्च तक 77 वां वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें आचार्य श्री योगेन्द्र याज्ञिक (होशंगाबाद), आचार्य श्री धीरेन्द्र पांडेय (जबलपुर) आदि के वेदोपदेश हुए। संस्कृत को द्वितीय राजभाषा घोषित करने पर उत्तराखंड सरकार को बधाई भी दी गयी।

– अमरेश कुमार आर्य, प्रवक्ता

आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया

आर्यसमाज तिलक नगर छावनी, कोटा द्वारा 17 मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में पं0 आशाराम जी (गाजियाबाद), पं0 विरधीचंद ने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के बारे में अपने विचार रखे। कार्यक्रम में भारी संख्या में आर्यों ने भाग लिया।

– नरेन्द्र विजयवर्गीय, मंत्री

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली का

55 वां वार्षिकोत्सव

5 अप्रैल से 11 अप्रैल

आर्यसमाज लाजपत नगर का 55 वां वार्षिकोत्सव 5 अप्रैल से 11 अप्रैल तक धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ, वेद कथा, महिला सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है। आर्य महिला सम्मेलन (10 अप्रैल) में श्रीमती प्रभा ग्रोवर, श्रीमती शकुंतला आर्या (पूर्व महापौर, दिल्ली) डॉ. उषा शर्मा, डॉ. निष्ठा विद्यालंकार आदि अनेक विदुषियां भाग लेंगी।11 अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। आयोजन में स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री परविन्दर सिंह मरवाह (विधायक, पार्लियामेंट्री सैक्रेटरी) श्री राज सिंह आर्य (प्रधान, दि. आ. प्र. स.) आदि उद्‌बोधन देंगे। आप इसमें सपरिवार आमंत्रित हैं।

– राजेश मेंदीरत्ता, प्रधान

आर्यसमाज खामपुर नई दिल्ली–8 एवं महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव 7 से 11 अप्रैल

आर्यसमाज खामपुर नई दिल्ली–8 एवं महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल द्वारा 7 से 11 अप्रैल तक वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है। 7 एवं 8 अप्रैल को प्रातः 6 से 8 बजे तक प्रभातफेरी निकाली जायेगी। 9 अप्रैल को प्रातः 7.30 से 8.30 तक यज्ञ होगा। 8.45 से12 बजे तक छात्रों के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण होगा। इसमें महाशय धर्मपाल जी (प्रधान, आ. के. स.), राजीव जी आर्य (महामंत्री, आ. के. स.), ब्र. राज सिंह जी आर्य (प्रधान, दि. आ. प्र .स.), धर्मपाल जी आर्य (आर्य नेता) आदि भाग लेंगे। 10–11 अप्रैल को आर्यसमाज का 69 वां वार्षिकोत्सव मनाया जायेगा। आप कार्यक्रम में सपरिवार पधार कर इसे सफल बनायें।

– कृपाल सिंह, मंत्री

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक–युवतियों का परिचय सम्मेलन पंजीकरण यथाशीघ्र कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा प्रारंभ की गयी आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के लिए पंजीकरण किया जा रहा है। कुछ आर्य जनों ने इसके लिए 28 फरवरी को आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में पंजीकरण कराया था। उपलब्ध फार्मों के आधार पर विवाह डायरेक्टरी के प्रकाशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है। परिचय सम्मेलन से15 दिन पूर्व पंजीकृत महानुभावों को डायरेक्टरी उपलब्ध करा दी जायेगी। **यह सम्मेलन जून 2010 में आर्यसमाज पंजाबी बाग (प0) में होना प्रस्तावित है।** अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे 5/– रुपये का डाक टिकट लगा अपना पता लिखा लिफाफा भेजकर पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.delhisabha.com से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **100 रुपये (एक सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए इस योजना के **संयोजक श्री गोविन्द लाल जी (मोबा. 9811623552) एवं श्री कंवरभान खेत्रपाल जी (9210484859)** से संपर्क कर सकते हैं।

– विनय आर्य, महामंत्री , 9958174441

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली का 32 वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज समाज सरस्वती विहार, दिल्ली का 32 वां वार्षिकोत्सव12 से18 अप्रैल तक मनाया जा रहा है। 10 अप्रैल को प्रातः 6 से 8 बजे तक आर्यसमाज मंदिर सी ब्लाक से प्रभातफेरी निकाली जायेगी।12 अप्रैल से 17 अप्रैल आचार्य हरिप्रसाद जी के ब्रह्मत्व में सामवेद शतक यज्ञ प्रतिदिन प्रातः 6 से 8 बजे तक होगा। उनके प्रवचन और श्रीमती सुदेश आर्या के भजन होंगे। 14 अप्रैल को मध्याह्न में आर्य महिला सम्मेलन होगा। 18 अप्रैल को पूर्णाहुति होगी और 10.30 से 12.30 तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा। आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की कन्याएं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी। इस आयोजन में महाशय धर्मपाल जी (प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा), श्री राजीव आर्य (महामंत्री, केन्द्रीय आर्य सभा), श्री विनय आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) आदि भाग लेंगे। आप सपरिवार कार्यक्रम में सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठायें। *– ओमप्रकाश आर्य, प्रधान*

पृष्ठ 3 का शेष

कुम्भ पर्व का अनर्गल ...

मन्त्र का पूर्ण चरण है–

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः।।(यजु.19/87)।

मन्त्र का 'कुम्भ' शब्द (कं जलं वीर्यम् उम्भति धारयति इति कुम्भः) वीर्यवान पुरुष का वाचक है। मन्त्र के गर्भः आदि पदों से निःसन्देह द्योतित हो रहा है कि मन्त्र के 'कुम्भ शब्द का वाच्यार्थ वीर्यवान पुरुष है, कुम्भ मेले नहीं। चतुर्वेदी जी द्वारा उद्‌धृत साममन्त्र भी 'कुम्भ माहात्म्य' का वर्णन नहीं करता। सच्चाई यह भी है कि सम्पूर्ण सामवेद में कुम्भ शब्द ही नहीं है। जिस मन्त्र को सुविज्ञ चतुर्वेदी जी ने उद्‌धृत किया है उसमें 'कलश' शब्द है जो शरीर का वाचक है। वह मन्त्र है–

आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते।(साम.पू.489:6/1/3)।

इस साम मन्त्र में जितेन्द्रिय वीर्यमान् आत्मा का वर्णन है, कुम्भ माहात्म्य का नहीं। इस प्रकार वेद की अन्तः साक्षियों से सुविदित निष्कर्ष निकला कि अर्धकुम्भ, पूर्णकुम्भ की सिद्धि में चतुर्वेदी जी द्वारा दिये गये वेदों के उद्धरण अनर्गल व भ्रामक हैं। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में हरिद्वार आदि कुम्भ के उपजीव्य वचन उपलब्ध नहीं है। कुम्भ मेलों की परिकल्पना कल्पित मात्र है। ये विभाग कल्पित है। इसकी पुष्टि इन मतभेदों से हो जाती है कि कोई इन कुम्भों के उद्‌भावक शंकराचार्य को मानते हैं और कोई सम्राट् हर्षवर्धन के राज्यकाल को मानते हैं।

साथ ही कुम्भ विषयक परिकल्पना के कामा मैकलीन के जो ऐतिहासिक विचार हैं, उन्हें जैसा कि चतुर्वेदी जी ने कहा–

"पश्चिमी विचारकों की स्वाभाविक कमजोरी है कि वे भारतीय सभ्यता, सांस्कृति, धर्म तथा परम्पराओं को उतना प्राचीन नहीं मानते जितना हम मानते हैं। ऐसे पूर्वाग्रह से मुक्त कम ही विचारक हुए हैं। इसीलिए ऐसी कमजोरी से कामा मैकलीन भी ग्रस्त हैं। यह कहकर सत्य गवेषणा को ओझल नहीं किया जा सकता। सत्य पर परम्पराओं का पर्दा नहीं डाला जा सकता। हाथ कंगन को आरसी क्या?''

विद्वान् लेखक को ज्ञात हो कि जिस प्रकार कुम्भ मेलों की परिकल्पना कल्पित है, वेद से अप्रतिपादित है, वैसे ही समुद्र मन्थन से निकले अमृत कलश की बूँदों का 4 स्थानों पर गिरना भी कपोल कल्पित है। प्रामाणिकता के लिए काठक संकलन का उद्‌धृत वचन पर्याप्त है। वह वचन है–

देवाश्च वा असुराश्चापां रसममन्थँस्तस्मान्मथ्यमानादमृतमुदतिष्ठत् ततो यः सर्वतो रसः समस्रवत् स सोमस्तत् सोमस्य सोमत्वम्।। (काठ.संक. 22/2/1–2)।

अर्थात् देवों और असुरों ने अपों= जलों के रस का मन्थ किया, उस मथ्यमान रस से अमृत निकला, ततः जो वह रस सर्वत्र फैला, वह सोम है, वह सोम का सोमत्व है। इस वचन का प्रथम महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि वचन में 'सर्वतः' शब्द आया है जिसका अर्थ 'सब जगह' है, इससे स्पष्ट है कि अमृत सर्वत्र फैला, मात्र 4 स्थानों पर ही नहीं।

वचन का दूसरा तथ्य यह है कि अपों के रस का मन्थन हुआ वह वृष्टि कर्म की क्रियाओं का उपलक्षक है। वचन के रस आदि शब्दों के गूढ़ार्थ ज्ञात होने पर वृष्टि माया की गम्भीरता स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार वचन का तात्पर्य हुआ–वृष्टि कर्म के सहायक द्योलोक के तत्त्व देव हैं। वृष्टि का जल अमृत, सोम, अन्न, उदक आदि अभिधानों वाला है, यतोहि उससे दुर्भिक्षादि की शान्ति होती है, निवृत्ति होती है। और वृष्टि का जल स्थान विशेष में नहीं, अपितु सर्वतः = सर्वत्र, समस्रवत् = फैलता है।

इस प्रकार कुम्भ पर्व का अनर्गल ऐतिहासिक विश्लेषण का विहंगम विश्लेषण है। पूर्ण विश्लेषण पुस्तकाकार ले सकता है। कुम्भ विषयक सत्यता को, उसकी ऐतिहासिकता को परम्परा से ऊपर उठकर विचारना आवश्यक है। भ्रान्तियों का निवारण, सत्य का धारण विद्वानों का निज धर्म है। त्रिलोकीय पदार्थों की गतियाँ, संक्रान्तियों की यथार्थकता न खो बैठें, एतदर्थ ऋषियों ने नये अभिधान नहीं दिये। इनकी महत्ता, इनकी उपलब्धता यज्ञ द्वारा ही व्यक्त की, जानी और समझी। जैसा कि वेद कहता है–

पृथिवी च मऽइन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च मऽइन्द्रश्च मे द्यौश्च मऽइन्द्रश्च मे समाश्च मऽइन्द्रश्चमे नक्षत्राणि च मऽइन्द्रश्च मे दिशश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।(यजु. 18/18)।

अर्थात् पृथिवी और पृथिवीस्थ सामर्थ्य, अन्तरिक्ष, अन्तरिक्ष का सामर्थ्य, द्यौ, द्यौ का सामर्थ्य, संवत्सर का सामर्थ्य, नक्षत्र, नक्षत्रों का सामर्थ्य, दिशायें, दिशाओं का समार्थ्य तथा मेरी अपनी शक्ति यज्ञ कर्म से सिद्ध होवे, समर्थ होवे। मन्त्र का तात्पर्य स्पष्ट है पृथिव्यादि की महत्ता का स्तवन व प्रापण यज्ञ द्वारा करें।

अन्त में निवेदन है कि प्रयागादि पूर्णकुम्भ, अर्धकुम्भ मनावें, उनके स्रोत का अन्वेषण वेद में न करें। इसके सत्य इतिहास को भी समझें।

–सुश्री आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा,
पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी–10
साभार : अग्निदूत

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

5 अप्रैल, 2010 से 11 अप्रैल, 2010

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ०८/०९-०४-२०१०
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्य महापुरुषों के नाम वाले मार्गों, पार्कों, चौक–चौराहों के कम्प्यूटरीकृत रिकार्ड का संकलन

आप सबको विदित ही है कि दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम ने आर्यसमाज से जुड़े महापुरुषों के नाम पर दिल्ली में कुछ मार्गों, पार्कों, चौक–चौराहों, बाजारों, संस्थानों आदि का नामकरण हुआ है। इससे आम लोगों को आर्यसमाज और उसके महापुरुषों के बारे में पता चलता है। इसके साथ ही ये सारे तथ्य सरकारी रिकार्ड में आ जाते हैं। आर्यसमाज के इतिहास के लेखन में ये सब सहायक बनते हैं। परन्तु प्रायः यह भी देखने में आता है कि जब–तब ऐसे मामलों को लेकर विवाद खड़ा हो जाता है और सरकार या नगर निगम उनका नामान्तरण कर देती है। तब हमारे पास जरूरी रिकार्ड का अभाव होता है। अतः ऐसे स्थलों के नामकरण के संरक्षण को लेकर हमें सदैव सजग रहने की जरूरत है।

इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए सभा इन सबका कम्प्यूटरीकृत रिकार्ड (संकलन) तैयार कर रही है। परन्तु यह कार्य आप सबके सहयोग से ही संभव है। यदि आपके घर, दुकान, कार्यालय और आसपास के क्षेत्र में आर्यसमाज से जुड़े महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क, चौक–चौराहा, बाजार, संस्थान आदि हैं तो उनका नामकरण कब हुआ? उनका नामकरण किस एजेंसी ने पारित किया – जैसे डी.डी.ए., एन.डी.एम.सी., एम.सी.डी., दिल्ली सरकार आदि–आदि। उनकी लोकेशन क्या है आदि की जानकारी सभा कार्यालय को उपलब्ध कराने का कष्ट करें। हो सके तो ऐसे स्थलों पर लगी नाम पट्टिका जिन पर आर्यसमाज के महापुरुषों के नाम अंकित हों उनकी फोटो उपलब्ध करा दें तो हम सबके लिए वे बहुत ही महत्वपूर्ण और लाभकारी होंगे। भविष्य में यदि कभी ऐसे मामलों पर विवाद होता है तो हम उसके लिए आप द्वारा उपलब्ध कराये गये तथ्यों एवं फोटो के आधार पर अपना पक्ष सरकार या कोर्ट के समक्ष पूरी दृढ़ता के साथ रख सकते हैं। ऐसे मार्गों, पार्कों आदि की सूची आर्यसन्देश में प्रकाशित करेंगे। यह जानकारी aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

– महामन्त्री

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली –1 निम्नलिखित पदों के लिए योग्य, निष्ठावान, समर्पित एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अभ्यर्थियों से आवेदनपत्र आमन्त्रित करती है–

1. MBBS/BAMS(RMO) डॉक्टर –2 : सभा के चिकित्सालय दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल के लिए। डॉक्टर पति–पत्नी को वरीयता।

2. एकाउंटेंट– 1 कम्प्यूटर पर टैली में कार्य करने में निपुण हो।

3. ड्राइवर– 2 (एक कार वाहन चालक और दूसरा 407 मेटाडोर पर बने प्रचार वाहन के लिए) वैध लाइसेंस और बैजधारी हो। टेम्पो वाहन चालक के लिए द्वारिका, उत्तम नगर, पंखा रोड (दिल्ली) के आसपास रहने वाले को वरीयता। प्रचार वाहन के लिए किसी भी प्रदेश का चालक अभ्यर्थी हो सकता है। उसे दिल्ली और अन्य प्रदेशों में भी आना–जाना होगा। आवास और भोजन की सुविधा दी जायेगी।

विशेष– आर्य परिवारों को वरीयता। सेवानिवृत्त महानुभाव जो अपना पूरा समय सभा में देना चाहें, उनका हार्दिक स्वागत है। इच्छुक अभ्यर्थी अपने आवेदन पत्र बायोडाटा (जीवनवृत्त) के साथ शीघ्रातिशीघ्र उपर्युक्त पते पर भेजें अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री

प्रतिष्ठा में,
श्री..........................

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

– सम्पर्क करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110 01

दूरभाष : 23360150, 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर